asleep. Suddenly the people heard a loud-noise and they got up. Sir, these people dismantled the compound wall of the temple. While they were demolishing the compound wall, they also demolished a Ganesh temple. It is very unfortunate. Two days back, I visited that place. I immediately brought this matter to the notice of the hon. Defence Minister. The hon. Defence Minister gave directions to the concerned authorities, but nothing has happened so far. The area is very tense and it is in a state of panic. They are threatening the people. The *poojary* of the temple was beaten by the Army personnel. *(Interruptions).* Sir, I would like to request the Defence Minister to take immediate action and to see to it that the compound wall is restored. The Ganesh temple should be reconstructed. The Sub-Area Commander should be shifted from that place and strict action should be taken against him. Sir, in spite of the High Court directions, they have done this thing. The Executive Officer should also be shifted from that place. These are my two demands. I would request the Minister for Parliamentary Affairs, through you, to eonvey the feelings of the people of that area to the Defence Minister. I hope justice would be done to these people. Thank you.

RE: HARASSMENT OF WOMEN SELLING HANDICRAFT ITEMS ON THE SIDE WALLS OFF JANPATH

SHRIMATI MARGARET ALVA (Karnataka): Whether you spoke about bank loans or whether you spoke about atrocities committed on women, whatever the point that was raised today, ultimately it led to one point and that is, that women are at the receiving end, whether inside Parliament or outside Parliament.

यहां भी तो लड़-लडकर थक गए । बैठना भी पड़ता है पर यहां कुछ नहीं होता है।

कुछ माननीय सदस्य : हम आपके साथ हैं।

SHRIMATI MARGARET ALVA: I am glad that men today raised the question of atrocities on women. On the International Women's Day, the Delhi University students marked the day by protesting against viloence against women students and the harassment that they face in the university. The other day, a flat in Gurgaon was broken into and three young girls living there were raped in the middle of night and photographs were also taken. This was reported in the newspapers, they are breaking into flats and doing this to women. You can imagine the condition that they are facing. I think the Home Minister had promised and the Prime Minister had said that a special cell was going to be created. We have not heard the follow-up on that.

Connected to this, I am bringing to the notice of the House and of the Government the harassment faced by a large group of women not very/large, maybe, 50, 60 women who run side stalls off Janpath road. They.sell some of the most beautiful handicraft items at very cheap and reasonable rates. Hundreds and hundreds of tourists, foreigners and Indians from other parts of the country go there and buy from them. They are harassed day in and day out. They are told that the stalls are unauthorised. They have to pay regularly to the people who carry away their goods.

Out of the meagre earnings that they get, they have to keep the Corporation people and the local police happy by paying some money. Every single section that has come from either Jammu and Kashmir or other parts of the country because of problems has been rehabilitated with some temporary shelters. Whether it is rainy season, summer or winter, they have no shelter, they have no protection, they sit there with their little children. They are appealing repeatedly for some kind of protection and some kind of regularisation so that they are able to earn whatever little they are earning and support their families in the desert areas

and the backward areas of Rajasthan and Gujarat. I am therefore, appealing to the Govemment to see that some steps are taken to protect them from this kind of permanent harassment.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): Sir, I would like to associate myself.

It is true that people are encroaching upon land illegally. But on the other hand, we have a Government which says that it wants to encourage handicrafts. These are women who are making a living for themselves. At least, they are not begging. They are trying to keep their mind and body together.

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी) : वीणा वर्मा जी और सुश्री पांडेय जी का नाम भी इससे सम्बद्ध किया जाता है । डा. वाई. लक्ष्मी प्रसाद जी, आप एक मिनट में बोलिए ।

श्री विष्णुकान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश) : महोदय, एक मिनट की बात नहीं है । उनको बोलने का अवसर दिया जाए । फिर थोड़ा सा मुझे भी बोलने का अवसर दिया जाए ।

RE: CENTENARY CELEBRATIONS OF SHRI SURYAKANT TRIPATHI 'NIRALA'

डा. वाई. लक्ष्मी प्रसाद (आन्ध्र प्रदेश) : महोदय, अगर सरकार इस ओर ध्यान देगी तो एक मिनट भी बात करने की आवश्यकता नहीं है । महोदय, 1945 में जिस कवि ने इस देश में जो शोषित, पद-दलित और दबे हुए हरिजन लोग हैं, उनके लिए आवाज उठाई थी, उस कवि की जन्म-शताब्दी मनाने के लिए इस सरकार के पास समय और पैसा नहीं है । समाज की उस शोषित विधवा के बारे में उन्होंने जो कविता लिखी है और भिक्षुक के बारे में जो चित्र खींचा है कि –

"वह आतां,

दो टूक कलेजे के करता,

पछताता पथ पर आता ।"

श्री सुर्यकांत त्रिपाठी निराला हिन्दी प्रांत के नहीं थे । वे बंगाल के सुपुत्र थे लेकिन हिन्दी के छायावाद, प्रगतिवाद और रहस्यवाद के मूर्धन्य कवि हैं । उनकी जन्म-शताब्दी मनाने के लिए इस सरकार के पास समय और पैसा नहीं है । पिछले साल मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सलाहकार समिति के सदस्यों ने उनकी जन्म-शताब्दी मनाने के लिए सरकार से आग्रह किया था लेकिन अभी तक कुछ भी नहीं किया गया है । आदरणीय जनेश्वर मिश्र जी सदन में मौजूद हैं , मैं उनसे प्रार्थना करता हूं कि वे इस और सरकार का ध्यान दिलाएं । धन्यवाद ।

श्री विष्णुकांत शास्त्री (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मानव संसाधन विकास विभाग की स्थाई समिति मे मैंने इस संबध में एक प्रस्ताव दिया था और मानच ससांधरन विकास मंत्रीजी ने हमें आश्वासन दिया था कि वे इस पर कार्यवाही करेंगे लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि अभी तक कोई काम नहीं हो सका है । फिर उन्होंने मुझसे कहा कि मैं लिखित रूप से यह बात उनके सामने रखूं । महोदय, कलकत्ता में जो निराला जन्मशती समारोह समिति हैं, मैं उसका अध्यक्ष हूं । उसकी तरफ से मैंने उनको प्रस्ताव दिया है, मैं वह चाहता हूं कि सारा सदन इस बात का समर्थन करे कि हिन्दी के आधुनिक सबसे बड़े कवि पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जो कि वास्तव में राष्ट्रीय कवि हैं , का देश में बड़े पैमाने पर जन्म शती समारोह मनाया जाएगा और उसके लिए यह न कहा जाए कि सरकार के पास पैसा नहीं है । मैं आपके माध्यम से इस सरकार से अपील करता हूं कि सारे देश में बड़े पैमाने पर निराला जी का जन्म शती समारोह मनाया जाए। पश्चिमी बंगाल के महिषाद में जहां वह पैदा हुअ वहां उनकी मूर्ति स्थापित की जाए । मेरे मित्र डा0 विप्लव दासगुप्त ने और मेरे मित्र श्री सोमनाथ चटर्जी की जी ने मुझे आश्वासन दिया है कि अगर केन्द्रीय सरकार वहां मूर्ति देगी तो वह उसको स्थापित कराएंगे, उसके रखरखाव की चेष्टा करेंगे ।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे बहुत ही लज्जा के साथ कहना चाहता हूं कि मैं उनके पैतृ ग्राम गढ़ाकोला में खुद गया था । वहां निराला जी के नाम पर एक प्राथमिक विद्यालय है जिसमें फटा हुआ टाट बिछा हुआ था। मैं आपसे शपथपूर्वक कहता हूं कि वहां निराला जी के नाम पर एक पुस्तकालय है जिसमें एक भी पुस्तक नहीं थी । मैं बहुत ही लज्जा के साथ कहता हूं कि वहां निराला जी के नाम पर एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र हैं जिसमें टूटी हुई कुर्सियां थी, एक टूटी हुई अलमारी थी जिसमें दवाइयां नहीं थी। यह अगर निराला जी के साथ